

आसो सुद १२, रविवार ता. १८-१०-१९६४
श्री तारुणस्वामी द्वारा रचित श्रावकाचार, गाथा-२२१,
२२३, २२४, २३६ प्रपयन-२२

श्रावकाचार, तारुणस्वामी द्वारा रचित, उसकी २२१ गाथा है. कुल २०० लो गई थी. २२१. देओ! श्रावका आचरण कैसा होता है और उसको श्रावक कलनेमें आता है. प्रथम तो...

सम्यक्त्व यस्य चिंतते, बारंबारेय सार्थयं।

दोष तस्यं न पस्यंति, सिंध मातंग जूथयं।।२२१।।

क्या कलते हैं? देओ! ओ कोई सम्यक्दर्शनको यथार्थरूपसे. 'सार्थयं' है न? यथार्थ रूपसे. यथार्थ रूपका अर्थ क्या? नौ तत्त्व जैसे हैं, ऐसा यथार्थ ज्ञान करके. भिन्न-भिन्न नौ तत्त्वका कार्य है. जव, अजव, पुण्य, पाप, आस्रव, संवर, निर्जरा, अंध और मोक्ष. उसमें दो द्रव्य है और सात पर्याय है. उसका नौका भिन्न-भिन्न कार्य है, भिन्न-भिन्न मार्ग है. ऐसा बारंबार निर्णय करके, बादमें यथार्थपने बारंबार आत्माका अनुभव करना. 'चिंतते'का अर्थ अनुभव है. 'चिंतते' शब्द है न? उसका अर्थ अनुभव है.

'सम्यक्त्व यस्य चिंतते' सम्यक्दर्शन-आत्मा परिपूर्ण शुद्ध, पुण्य-पापका विकल्पसे, देहादिसे, कर्मसे भिन्न ऐसा समकितको 'यस्य' ओ कोई 'चिंतते' नाम अनुभव करता है अंदरमें. 'बारंबारेय सार्थयं'. बारंबार अनुभवमें लगता है. अंतर्मुख राग और पुण्य-पापका भाव, उससे भिन्न अपने आत्माको अंतरमें बारंबार यथार्थपने लगता है. यथार्थ क्यों कल? अनादिसे अज्ञानी अपनी कल्पनासे माने कि ऐसा नौ तत्त्व और ऐसा-ऐसा है. विकल्प और कल्पनासे आत्मामें अकाग्र हो वल यथार्थ अकाग्रता नहीं है. समजमें आया? बारंबार नाम बारंबार अनुभव करते हैं. (यल) 'चिंतते'का अर्थ है.

'दोष तस्यं न पस्यंति'. उसको दोष नहीं आते हैं. उसको दोष अंतरमें आते नहीं. स्वभावकी दृष्टिमें दोषका आदर होता नहीं. समजमें आया? कल, सेठी! भगवान आत्मा... बादमें २२३में कलेंगे. अक समयमें नौ तत्त्वमें ज्ञायकतत्त्व, पुण्य परिणाम दया, दान, भक्ति, व्रतका विकल्प है वल पुण्यतत्त्व है. लिसा, बूठ, चोरी, विषयभोग वासना पापतत्त्व है. दोनों मिलकर आस्रवतत्त्व है. त्रिकाव ज्ञायक आनंद शुद्ध स्वभाव (है). रागमें जितना रुकता है ठतना भावअंध तत्त्व है. शरीर, कर्म आदि अजवतत्त्व है. और त्रिकावी ज्ञायकस्वभाव, उसकी दृष्टि करनेसे शुद्धिकी उत्पत्ति होती है वल संवरतत्त्व है. विशेष अकाग्रता होनेसे शुद्धिकी वृद्धि होती है वल निर्जरातत्त्व है. और पूर्ण शुद्धिकी प्राप्ति होती है उसका नाम मोक्षतत्त्व

है. समझमें आया?

ऐसी बात जैनदर्शन अथवा आत्मदर्शन बिना तीनकालमें दूसरे स्थानमें ऐसा होता नहीं. 'सर्वविधे' यथार्थ रूपे नौ तत्त्वका भान कर आत्माका बारंबार अनुभव करते हैं. 'दोष तस्यं न पस्यंति' वहां दोष आते नहीं. अल्प दोष होते हैं, उसे अपनेमें भिजाते नहीं. सम्यग्दृष्टि तीन कषाय, दो कषायका रागादि होता है, लेकिन अपने स्वभावमें भिजाते नहीं. समझमें आया? शास्त्र वाचनमें बहुत जिम्मेदारी है. सर्वज्ञ परमात्मा देवाधिदेव तीर्थंकरों, गणधरों, संतोंसे अनादिसे जो प्रवालसे मार्ग चला आ रहा है, उसमेंसे अकेली झेरकार बढाममात्र हो जाये (तो) सारे तत्त्वमें विरोध हो जाये. समझमें आया? 'सर्वविधे' वहां 'सार्थयं' (कहा है). बराबर यथार्थपने बारंबार सम्यग्दर्शनकी चीजको अनुभवमें करते हैं, उसको 'दोष तस्यं न पस्यंति'. उसको दोष आता नहीं. कैसे?

'मातंग जूथयं' इस्तिके जुंड सिंलको नहीं देजते हैं. समझमें आया? जहां सिंल है वहां लथी रहता नहीं. जहां सिंलकी गर्जना सुने, लथीका समूह चला जाता है. है न? 'सिंध मातंग जूथयं'. 'मातंग' नाम लथीका समूह हो, अकेली सिंलकी गर्जना हो, चले जाते हैं. जैसे भगवान आत्मा अपना सम्यग्दर्शनका टंकार, रणकार अंदरमें अनुभवमें करते हैं, दोष चला जाता है. दोष रहता नहीं. दोष पलायमान (-भाग) जाता है. थोडा दोष रहता है उसका भेद रहता है, उसका नाम ... कलनेमें आता है. समझमें आया? दृष्टांत दिया है न? सिंलको नहीं देजते. नहीं देजतेका अर्थ लथी वहां जडा ली नहीं रहता. जहां सिंल है वहां लथी नहीं रहता.

जैसे अपना स्वरूप अकेले समयमें विकल्प आदि हो, रागादि हो, शरीरादि हो, है सब अस्ति. उससे निरावा अपना स्वरूपका अनुभव दृष्टि करनेवाला अपनेमें सिंलकी भांति स्वभावकी अकाग्रताकी पुकार रणपुकार (करता है तो) दोष आते नहीं. 'दोष तस्यं न पस्यंति' समझमें आया? उसको दोष अंतरमें होता नहीं. उसको सम्यग्दृष्टि कलते हैं. ये अविरत सम्यग्दृष्टिका श्रावकाचार (है). समझमें आया? अभी आया नहीं? कौन-सी गाथा आयी? २५४? अभी २५४ कही न? भाई! देजो! 'आचरण द्विविधं प्रोक्तं' उसके साथ संबंध है. ये श्रावकाचार है न? तो 'आचरण द्विविधं प्रोक्तं' जैसे लेना. 'त्रिविधं प्रोक्तं' नहीं लेना.

भगवान परमात्माने आचरण दो प्रकारका 'प्रोक्तं' सविशेषसे कहा है. अकेले, सम्यक्त्व. अकेले संयम. प्रथम 'प्रथमं सम्यक्त्व चरणस्य, स्थिरी भूतस्य संजमा'

चारित्रं संयम चरणं, शुद्ध तत्त्व निरीक्षणं।

आचरणं अवधिं दृष्टं, सार्धं शुद्ध दृष्टितं॥२५५॥

देजो! आचरण दो प्रकारका कहा गया है. आचरणका दो प्रकार है. अकेले, सम्यक्त्व आचरण. समझमें आया? सम्यक्त्व आचरणका अर्थ अपना शुद्ध चैतन्य राग और परसे रहित अकाकारका

दर्शन होना, वह सम्यक्त्व आचरण नामका प्रथम आचरण कलनेमें आता है. कोई कहे कि, आचरण-बाह्य किया करे वह आचरण है. यह आचरण है, वह आचरण नहीं है. समझमें आया? पहला सम्यक्त्व आचरण है. सम्यग्दर्शनमें पहला सम्यक् आचरण है. पंडितजी!

दूसरा, निश्चल संयम आचरण. दूसरा सम्यग्दर्शन होनेके बाद स्वप्नमें चारित्रकी विशेष लीनता. अनाचरण रागादिको छोडकर स्वप्नमें स्थिरता उग्रपने करना वह संयमरूपी दूसरा आचरण है. लेकिन जिसको सम्यग्दर्शन आचरण होता है, उसको संयम आचरण होता है. सम्यग्दर्शन आचरण नहीं है, यहां संयम आचरण बिलकूल होता नहीं. इसलिये यहां दो शब्दमें पहले सम्यक् आचरण कलनेमें आया है.

'प्रथम अस्थिरीभूतस्य सम्यक् चरणं संयमं'. प्रथम जो सम्यक् आचरण है वह श्रद्धानमें स्थिर होकरके भी चारित्र अपेक्षासे यंचलरूप है. देओ! है न? 'अस्थिरीभूतस्य'. सम्यग्दर्शन आचरणमें... अपने अष्ट पाहुडमें दो आचरण आता है. वही शब्द है. आता है. समझे? शील पाहुडमें आता है, शील पाहुड है न? चारित्र पाहुडमें आता है. सम्यक् चरणं. भगवान आत्मा.. मूल गाथा है. 'अस्थिरीभूतस्य सम्यक् चरणं संयमं'. सम्यक् आचरण होता है, यहां श्रद्धानमें स्थिर (होता है). सम्यग्दर्शनमें निःशंक स्वप्नकी प्रतीतिका अनुभव. उसमें बिलकूल दोष है नहीं. लेकिन चारित्रकी अपेक्षासे यंचलरूप है. 'अस्थिरीभूतस्य संयमं' 'स्थिरीभूतस्य सम्यग्दर्शन'. उसमेंसे जैसे लेना. सम्यग्दर्शनमें स्थिरीभूत है और संयमकी अपेक्षासे अस्थिरीभूत है. चारित्रका दोष है उसमें. सम्यक् आचरणमें संयम आचरण नहीं होता. समझमें आता है?

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- इसमें समझमें आये (जैसा है). ये तो सीधी बात सादृमें सादी चलती है.

आत्मा अपना शुद्ध स्वप्न पुण्य-पाप, आस्रव, बंध और निमित्त एवं अज्जवसे लडकर, अपना पूर्णानंद स्वप्नकी प्रतीतिका अनुभव करे, उसे सम्यक् आचरण कलनेमें आता है. ये सम्यक् आचरण, समकितिका सम्यक् आचरण चौथे गुणस्थानमें (होता है). इस आचरणमें स्वभावकी श्रद्धा स्थिर है. श्रद्धामें अस्थिरता है नहीं. लेकिन संयमकी अस्थिरता, यंचलता सम्यक् चरणमें होती है. कलौ, समझमें आया? वद्वलदासलार्थ!

मुमुक्षु :- ये नया है.

उत्तर :- नया कुछ नहीं है. ये सब तो अपने शास्त्रमें आ गया है. ये तो सेडको उतारना है उसमें (टेपमें) इसलिये लेते हैं. यहां तो शास्त्रमें ये सब आ गया है. तीन लज्जर तो उतर गये हैं. रेकोर्डिंग. तीन लज्जर तो रेकोर्डिंग उतर गया है. पूरा समयसार ४०५ रेकोर्डिंग उतर गया है. पूरा समयसार. ४०५ रेकोर्डिंग उतरा है. सब उतरता है. यहां तो बीस सालसे चलता है. समझमें आया? ये तो तारुणस्वामीकी साक्षीके शास्त्रमें

क्या है, वह बताना है. समझमें आया? हम तारुणसमाज है. लेकिन क्या तारुणसमाज कलता है, मालूम है? मालूम नहीं है तो समाज कहांसे आया? डालचंदल! समझमें आया?

भगवान परमात्मा त्रिलोकनाथ जिनेंद्र परमेश्वर, उसके मार्गमें जो कला, वह अपनी भाषामें तारुणस्वामीने चलती भाषामें लिखा है. सादी साधारण भाषामें. समझमें आया? 'प्रथम अस्थिरीभूतस्य सम्यक् चरणं संयमं' प्रथम जो समकित निःशंक अपने अनुभवमें (आया है). मैं पूर्णानंद हूं. मेरी पर्यायमें विकार है वह मेरा स्वभाव नहीं. कर्म आदिका संयोग व्यवहारसे है. परमार्थसे मेरा संबंध है नहीं. जैसे सम्यग्दर्शनके आचरणमें श्रद्धानमें स्थिर होकर भी चारित्र्य संयम है. उस संयमवनेको मिटाकर स्थिर होना सो संयम है. वो. पंचम और छठा गुणस्थानकी बात है. आंशिक संयम आचरण पांचवेमें है, विशेष संयम आचरण छठेमें है.

संयमका अर्थ-आत्मा जैसा शुद्ध परमानंद ज्ञायक अपने भान, अनुभवमें आया था, उसमें लीन, स्थिर, अकाङ्क्ष हो जाना उसका नाम संयम आचरण कलनेमें आया है. उसमें संयमकी चपलता जो पहले सम्यग्दर्शनमें थी, वह संयममें अस्थिरता, चपलता रहती नहीं. समझमें आया? देओ! 'चारित्र्यं संयम चरणं' जैसे संयमभावमें चर्चा करना, दूसरा संयम आचरण सम्यक्चारित्र्य है. जहां 'शुद्ध तत्त्व निरीक्षणं'. शुद्ध आत्मिक तत्त्वका ही अनुभव होता है. वह आचरण सखल देखा जाता है. क्या कहते हैं? यौथे गुणस्थानमें, पांचवे और छठेमें जहां-जहां निर्मल सम्यग्दर्शन और संयमका अंतर निर्विकल्प अनुभव है, वह यथार्थ आचरण सखल देखनेमें आया है. साथमें पंच महाव्रतका विकल्प मुनिको हो, पंचम गुणस्थानमें बारह व्रतका विकल्प हो, यौथे गुणस्थानमें भक्ति, दया, दान आदिका विकल्प हो, वह व्यवहार आचरण है. ये परमार्थ आचरण नहीं है. स्वभावमें स्थिर होना वह परमार्थ आचरणकी सखलता है. समझमें आया? निश्चयकी बात है न? मुख्य निश्चयकी बात है. इसलिये कला है. देओ!

'शुद्ध तत्त्व निरीक्षणं'. ... आचरण सखल देखा जाता है. वही यथार्थ शुद्धात्माका दर्शन है. वो. 'सार्धं शुद्ध दृष्टितं'. समझमें आया? ये तो यहां समकित आचरण आया न? २२१में. समझे? समकित कला न? समकितके साथ आचरण जैसा लेना. अपना समकित शुद्ध चैतन्य सर्वज्ञ परमात्माके शासनमें कला जैसा, जैसे स्वभावकी अंतर दृष्टि करके अकाग्रता होना, सम्यग्दर्शनमें अस्थिरता न होना, वह सम्यग्दर्शनका आचरण है. निःशंक, निःकाङ्क्षित आदि आठ आचार है कि नहीं? समकितका आठ निश्चय आचार है. निश्चय. व्यवहार तो देव-गुरु-शास्त्रमें श्रद्धा, उसमें शंका न करना वह व्यवहार विकल्प है. यहां निश्चयकी बात है.

स्वप्नमें निःशंक पूर्णानंद प्रभु, मेरा स्वप्न परमात्मा ही मैं हूं, जैसा अनुभवमें देखना.

निःकांक्ष-पुण्यकी भी ईच्छाका विकल्प नहीं. समझे? अन्य देव, कुट्टेव-कुगुरु-कुशास्त्रकी तो ईच्छा नहीं, लेकिन पुण्यके विकल्पकी ईच्छा नहीं. निःकांक्ष निश्चयचारित्र है. समकितका निश्चय आचार है. निःशंक, निःकांक्षित, निर्विचिकित्सा. संदेह नहीं कि मैं ईतना-ईतना पुरुषार्थ करता हूँ, क्यों केवलज्ञान नहीं होता है? समझमें आया? अपने पुरुषार्थकी कमी है, उसमें संदेह होता नहीं. अमूढदृष्टि. मूढ नहीं. ये परिपूर्णा स्वभाव कलते हैं, ऐसा है, श्रद्धामें भासता है लेकिन प्रगट नहीं होता. समझमें आया? उलझनमें नहीं आता, मूढ नहीं होता. मेरे पुरुषार्थकी जितनी कमी है, उतनी पर्यायमें पूर्णता आती नहीं. उलझता नहीं. मैं परिपूर्णा आत्मा हूँ. ऐसा अनुभवकी दृष्टिमें देभना और उसमें उलझनमें नहीं आना. क्या कलते हैं? गभराणा नहीं. तुम्हारी हिन्दी भाषा हमें बराबर नहीं आती. हमारेमें मुंजाना नहीं (कलते हैं), मूजाता नहीं. ऐसी काठियावाडी भाषा है. समझे? गभराण्ट नहीं होना. ये क्या? ध्यान करते-करते ध्यान अस्थिर हो जाता है. अरेरे..! क्या मुझे आत्माकी शुद्धता नहीं प्रगट होगी? पूर्ण नहीं होउंगा? ऐसी उसमें मूढता आती नहीं.

उपगूहन. अंदरमें अपने गुणकी वृद्धि करते हैं. शुद्ध स्वभावकी श्रद्धा-ज्ञान करके, अनुभव करके शुद्धिकी वृद्धि करते हैं, वह उपगूहन है. स्थिरिकरण है. अपने स्वप्नमें स्थिर होना, अस्थिर न होना. वात्सल्य. अपने अनंत गुण प्रति वात्सल्य-प्रेम. जैसे गायके बच्चे पर गायको प्रेम है. गाय कलते हैं न? गौ. बछड़े पर-बच्चे पर. जैसे अपने अनंत गुणों पर प्रेम है. राग और विकल्प पर प्रेम नहीं. प्रभावना. प्र-भावना. अपने अनंत गुण जो दृष्टिमें, ज्ञानमें लिये हैं उसकी प्र-विशेषरूपसे भावना-अेकाग्र होकर शुद्धिकी वृद्धि करना उसका नाम निश्चय निःशंकतासे लेकर प्रभावना (तक), समकितका आठ आचरण कलनेमें आता है. समझमें आया? कितना याद करना ईसमें? २२१ हो गयी. २२३.

यस्य हृदये सम्यक्त्वं, उदयं शाश्वतं स्थिरं।

तस्य गुणस्य नाथस्य, आसक्तं गुण अनंतयं।।२२३।।

जिसके अंतरंगमें अविनाशी शाश्वत स्थिर समकित .. है न? अर्थमेंसे .. निकाला. समझमें आया? भगवान आत्मा पूर्ण शुद्धिकी ऐसी प्रतीति अनुभवमें आ जाये कि क्षायिक दशा जैसे. समझमें आया? भले क्षयोपशम समकित हो तो भी वह क्षायिक लेकर (रहता है). क्षायिक हो तब क्षयोपशमका नाश हो. ऐसा समकित शुद्ध शाश्वत उदयं अविनाशी निश्चय .. लिया है.

'तस्य गुणस्य नाथस्य' समकित्ती कैसा है? शेष गुण-अनंत गुणका स्वामी है. समकित्ती अनंता, अपने अनंत गुणका स्वामी-धनी है. रागका धनी है, लक्ष्मीका मालिक नहीं, स्त्रीका मालिक नहीं, देश-राजका मालिक नहीं. समझमें आया? अनंत गुणका आता है न? अेक बार अनंत गुण नहीं कहे थे? कितने गुण कहे थे? पंडितजी! सुना है कि नहीं? अेक

द्रव्यमें कितने गुण? कदा था न? नहीं थे? थे. नहीं थे?

अभी तक जितने सिद्ध हुए हैं न? सिद्ध. छह महीने और आठ समयमें ६०८ जव मुक्तिमें जाते हैं. छह महीने और आठ समयमें ६०८ केवलज्ञान प्राप्तकर मुक्तिमें जाते हैं. ये मुक्तिकी संख्या अनंत है. अनंत पुद्गल परावर्तनसे अनादिसे मुक्ति यही है. मुक्ति कभी नहीं थी, पहले संसार था और सिद्धपद नहीं था, ऐसा है नहीं.

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- ऐसा है नहीं. ... अज्ञानी लोको भ्रमणमें करते हैं. आठ वर्ष संसार बडा है, बादमें मुक्ति छोटी है. अरे..! अक्कलके भां! अक्कलका भां यानी भा जानेवाला. समझमें आया? पहले आठ वर्ष था और बादमें मुक्ति हुई, ऐसा संसार अनादिमें है ही नहीं. अनादिअनंत सिद्ध है, अनादि संसार है. पहले संसार (था) और बादमें सिद्ध (होने लगे), मुक्ति ऐसा अनादिमें है नहीं. समझमें आया? डालचंदण!

मुमुक्षु :- नयी बात आयी.

उत्तर :- क्या नयी बात है, नयी कुछ नहीं. यहां तो बहुत बार आ गयी है. अेक जिनकी अपेक्षासे मुक्तिकी आदि होती है. और अनादि अपेक्षासे तो अनादि आदि बिना अनंत सिद्ध हैं. पहले सिद्ध कभी अेक भी नहीं थे और सब संसारी थे, तो नौ तत्त्व कहां रहा अनादिसे?

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- न रहे, कहां-से न रहे? वस्तु अनादि है. नौ तत्त्व अनादि है. वद्वलभासभाई! ये तो वकील (हैं), वकालत कराते हैं. समझमें आया? अे.. लीजाभाई! भाई! प्रभु! यह मार्ग तो अंतरका है. उसमें गडबड थोडी ली चले नहीं. थोडी हो तो जैसे आंभमें कण आता है न? कंकर, वैसे आंभमें नहीं (सुलता है) तो चैतन्यकी आंभ.. आगे कहीं आता है, हां! लोचन कदा है. आयेगा, कहां होगा कैसे मालूम पडे? समकितिका ज्ञान आंभ है. सम्यज्ज्ञान चैतन्यआंभ है. उसमें अेक कण ली विपरीत हो सकता नहीं.

अनादिसे सिद्ध अनंत हैं. पहले सिद्ध कभी नहीं थे और सिद्ध हुए, (यदि ऐसा हो तो) नौ तत्त्व अनादिके रहते नहीं. पंडितज्ज! अभ्यास नहीं, वस्तुका व्यवहार शास्त्रका अभ्यास नहीं. उसको ये निश्चयकी दृष्टि तो कहां-से हो? सेठ! ओलंभा तो बहुत देते हैं. आलाला..! भगवान परमेश्वर त्रिलोकनाथ, उसके आगमका अभ्यास नहीं. अरे..! आगमका अभ्यास होनेपर ली अंतर अनुभव नहीं हो तो सम्यज्दर्शन नहीं होता. यहां तो अभी आगमके अभ्यासमें गडबड (करते हैं), विपरीतताका पार नहीं, उसको सम्यज्दर्शन कभी होता नहीं. समझमें आया?

सम्यज्दृष्टि समझते हैं कि अनादिसे अनंत सिद्ध (हैं). अनंत पुद्गल परावर्तन हो गया.

सिद्धकी संख्या कितनी? अनंत. उससे निगोदके अंक शरीरमें अनंतगुना जव हैं. वल तो आया नली? बताया था न? ये वील-ङ्ग है न? वील-ङ्गको क्या कलते हैं? कल-कल. पानीमें नली लोती है? कल. बटाटा-आलु, शक्करकंद, मूला. उसकी अंक राई जितना कल लो तो उसमें असंख्य औदारिक शरीर है. औदारिक शरीर असंख्य. असंख्य यौबीसीके समय जितने. असंख्य यौबीसीके जितना समय लोता है, उतना तो अंक औदारिक शरीरमें है. अंक औदारिक शरीरमें अभी तक सिद्ध लुअे उससे अनंतगुना जव हैं. समजमें आया? लो, अभी तो बहुत आगेका कलना है. अभी तो प्रथम सीढीकी बात है.

अैसे सिद्धसे अनंतगुना जवकी संख्या (है). अंक शरीरमें अनंतगुना. अैसे-अैसे असंख्य शरीर. अैसे जवकी संख्या सिद्धसे अनंतगुनी. और जवकी संख्यासे परमाणुकी संख्या, ये परमाणु है न, अनंत परमाणुका स्कंध है, पिंड है, ये.. ये.. सब, कर्मण शरीर, मन, वाणी, यहां मन है रजकण जड मिट्टीका, आंठ पंजुडीके (आकारका) यहां है, जव विचार करता है तो निमित्त है. जैसे आत्मा देभता है तो ये जड आंभ निमित्त है. ये तो जड अनंत रजकणका पिंड है. अैसे मन है. वल सब जड. वाणी जड. उसके सब रजकण आभी दृनियाके सब जवसे अनंतगुना रजकण है. समजमें आया? सब जव संसारीसे रजकणकी परमाणु अनादि अस्तित्व अनादिअनंत अनंतगुणी संख्या है. उससे अनंतगुनी संख्या त्रिकालका समय है. अंक सेकंडके असंख्य समय जाये. क्या (कल)? अंक सेकंडमें असंख्य समय जाय. कालका सूक्ष्म भाग समय. अंक सेकंडमें आंभ अैसे करे तो असंख्य समय (जाये). अैसे त्रिकालका समय, अनादिअनंत समय, वल परमाणुकी संख्यासे अनंतगुना है. त्रिकाल समयसे आकाशके प्रदेश अनंतगुना है. है.. है.. है.. है.. अस्तित्व नली है अैसे है? है.. है.. है.. त्रिकाल पर्यायसे आकाशके प्रदेश अनंतगुना है. और उससे अनंतगुना अंक जव और अंक परमाणुके अनंत गुण हैं. समजमें आया? कल न? क्या कल? समजमें आया कि नली? २२३ (गाथा) चलती है कि नली?

गुण अनंत, शब्द पडा है कि नली? यौथा पद क्या है? अनंत (का अर्थ) अनंत र्तना. कितना? अभी कल र्तना, कल र्तना. कलते हैं कि 'तस्य गुणस्य नाथस्य, आसक्तं गुण अनंतयं'. अनंत गुण दृष्टिमें आये हैं, उन अनंत गुणका ज्ञानी स्वामी है. सम्यदृष्टि अनंत-अनंत अैसे गुण, अैसे आत्मा अनंत गुणका अंक द्रव्य. उसका सम्यदृष्टि स्वामी है. रागका नली. रागमें पडा लो, किर ली वल रागका स्वामी नली है. रागका स्वामी नली, देलका स्वामी नली, कर्मका स्वामी नली, धनका स्वामी नली. कलो, सेठ! मकानका स्वामी नली. यहां मकान किया था सेठने तल ये भाई बोले थे ये तो पत्थरका बना लुआ है. बात सखी है. डालयंदज! कल था कि नली? पत्थरसे बना है.

मुमुक्षु :- ...

उत्तर :- जैसेसे कुछ बना नहीं, वह तो पत्थरसे बना है. जैसेसे बना कलना व्यवहार है. पैसा भिन्न चीज है, पत्थर भिन्न चीज है. समझमें आया? पैसा अनंत परमाणु हैं. दूसरा परमाणुसे दूसरा परमाणु होता है? समझमें आया? यहां पहले कल न? जबसे अनंतगुना परमाणु हैं. अनंत परमाणु कैसे रहेंगे अपनी सत्तामें? कि दूसरे अनंत परमाणु जो पैसा है, उस जैसेमें अनंत परमाणु है. एक नोटमें अनंत परमाणु है. नोटसे मकान बना है? दूसरा परमाणुसे दूसरा परमाणु बनता है? ...यंदृष्ट! क्या है ये? आला..! अनंतगुना जबसे पुद्गल रहते नहीं. दूसरा पुद्गलसे दूसरा पुद्गल बन जाये तो दोनों एक हो जाये. आलाला..!

कहते हैं कि सम्यग्दृष्टि अंतरंगमें 'तस्य गुणस्य नाथस्य' वह गुणका नाथ है. उसका अर्थ-अपना अनंत-अनंत गुणका पिंड प्रभु, उसका स्वामी है. दृष्टि, ज्ञानमें जितना प्रगट हुआ उतनी पर्यायिकी रक्षा करता है और जितनी पर्याय आदि प्रगट नहीं की उसको प्राप्त करनेका प्रयत्न करता है. अनंत गुण तो स्वप्नमें है. पर्यायमें-अवस्थामें अल्प गुणांश भी प्रगट हुआ है उसकी रक्षा (करता है). नाथका अर्थ-जोगक्षेमको करनेवालेको नाथ कहते हैं. समझमें आया? सम्यग्दर्शन प्रगट हुआ, उसमें सर्व गुणांश ते समकित. सर्व गुणका एक-एक अंश प्रगट हुआ है. समझमें आया? प्रगट हुआ उसका रक्षण करता है और नहीं प्रगट हुआ उसे प्रयत्न करके प्राप्त करते हैं. उसका नाम अनंत गुणका स्वामी और पर्यायिका स्वामी सम्यग्दृष्टि है. सम्यग्दृष्टि राग, पुण्य, व्यवहारका स्वामी है नहीं. समझमें आया? देओ!

'आसक्तं गुण अनंतयं' देओ! 'आसक्तं'का अर्थ वह किया कि अनंत गुण पाये जाते हैं. दृष्टिमें अनंत गुण हैं और पर्यायमें भी अनंत गुणका एक अंश प्राप्त हुआ है. आलाला..! पर्याय समझे? व्यक्त. गुण शक्ति (रूप) है. अनंत गुणकी शक्ति जो अनंत गुण है, उसमेंसे अनुभव दृष्टि करके अनंत गुण जितने हैं, उसमेंसे एक-एक अंश निर्मलताका सम्यग्दर्शनमें (प्रगट हो जाते हैं). सर्व गुणांश ते समकित. एतना अंश प्रगट हुआ है. बाकी प्रगट करनेका प्रयत्न है. उसको सम्यग्दृष्टि कहते हैं. यह सम्यक् आचरणकी बात चलती है. ओलोलो..!

मुमुक्षु :- पहले तो चारित्रका आचरण आवे, बादमें समकितका..

उत्तर :- चारित्र धूलमें आवे. पहलेसे कहांसे आता है? अर्ध..! ऽलव्यंदृष्ट! क्या कल? पहलेसे व्रत ले लेना, ब्रह्मचर्य लेना, दया पालना, संयम पालना. बस! संयम आया ईसलिये अंदर समकित होगा ही.

मुमुक्षु :- ...

उत्तर :- है नहीं. अंदर सम्यग्दर्शन है नहीं तो संयम कहां-से आया? व्रत और मलाव्रत पालकर मर जाये, उसमें क्या है? छल-छल मलिनके उपवास करे. समझमें आया? वह

तो बात की थी न? 'उग्र तव' कल कल था न? 'उग्र तव' शब्द आया था न? कल आया था न? 'उग्र तव'. कल आया था अेक श्लोकमें. (श्लोक-२०८). उग्र तप करे, मर जाये बारल प्रतके, उपवास करके, सामायिक और पौषध उसके माने लुअे (करके) मर जाये तो क्या है? सम्यग्दर्शनकी अंतर अनुभव दृष्टि बिना, वल सब तो विकल्प है, पुण्यके परिणाम हैं और धर्म मानते हैं तो मिथ्यात्वकी पुष्टि करते हैं. अनंत पापकी पुष्टि करते हैं. समजमें आया?

दृष्टांत देते हैं न? मिंदुं काढता गिंटु पेहु. आपने सुना है? नहीं सुना है. बिछी-बिछी लोती है न? बिछी. बिछी-बिछी. बिछी नहीं लोती? अेक बुढिया थी, बुढिया. वृद्ध बाई. वल थोडी कंबूस थी. उसके धरके पास अेक वाडा था. वाडा समजे? ખाली जगल. ખुछी जगल थी. ખुछी जगलमें अेक बिछी मर गई. बिछी मर गई. बाईने देखा कि बिछी मर गई, अब क्या करना? दरिजनको.. क्या कलते हैं? लंगी. लंगीको बोलेगे तो अेक प्याली, दो प्याली.. अनाजकी प्याली क्या कलते हैं? (अनाज) देना पडे. ईतना अनाज देना पडेगा. गुमतासे लेकर, टोकरीमें राખ लेकर, टोकरी लोती है न? उसमें यूलेमेंसे राખ निकालकर बाहर डालने गई. बाहर डालने गई और दरवाजा था, ખाली दरवाजा ખुछा रल गया. वहां अेक गिंट घुमता था, गिंट. गिंट समजे? गिंट घुमता था, मरनेकी तैयारी जैसा जूरा (लो गया था). बाई डालने गई तो गिंट अंदर घुस गया. अंदर घुसा और गिंट मर गया. डालकर वापस आयी और देखा, लाय.. लाय..! ईसका क्या करना? बिछीको तो डेक दिया, ईस गिंटका क्या करना? ईसे तो उठाकर डेक नहीं सके. दरिजनको बुलाया. (उन्होंने) चार मन गेहू मांगे. चार मन गेहू. अेक बोरी गेहू चालिये, तो निकालेंगे. लाय.. लाय..! ये दृष्टांत लुआ.

वैसे अज्ञानी अकेला प्रत, तप, संयम, ईन्द्रिय दमनका राग करते-करते मुजे धर्म लो जायेगा. वल बिछी मरी है. समजमें आया? उसकी जहां रक्षा करने जाता है, वहां मिथ्यात्वका गिंट अंदर घुस जाता है. समजमें आया? रागकी क्रियाका स्वामी लोता है. राग मेरा कार्य है. दया, दान, प्रत, ब्रह्मचर्य आदिका विकल्प मेरा कार्य है. रागका स्वामी लोता है तो मिथ्यात्वका लकडा-गिंट अंदर घुस गया. गिंट मर गया. मिथ्याश्रद्धामें तेरे आत्माकी जिंदा ली मृत्यु लो गई. समजमें आया? करने गया प्रत, नियम, परंतु स्वभावका तो लान है नहीं. ईसलिये रागकी क्रियाका कर्ता लुअे बिना रलता नहीं. समजमें आया? कडक बात है.

कलते हैं कि पहले सम्यग्दर्शनका लान बिना प्रतादिका आचरण, संयमका आचरण कभी तीन कालमें लोता नहीं. बाहरसे दुनिया देजे और दुनिया माने कि सत्य वस्तुमें कोई विरोध नहीं आता, वल जूठ है. २२४.

सम्यक्त्वं दृष्टते उदयं भुवन त्रयं।
लोकालोक विलोकं च, आलबाले मुखं यथा॥२२४॥

देजो! कितना सम्यग्दर्शनका मालात्म्य और क्या स्वरूप है, उसका स्पष्टीकरण करते हैं। जिसने सम्यग्दर्शनका अनुभव कर लिया है, 'दृष्टते'का अर्थ अनुभव। भगवान् आत्मा राग पुण्य-पापका विकल्प होने पर भी, प्रतादिका विकल्प होनेपर भी मेरा स्वरूप उससे भिन्न है, उसका मैं ज्ञाता-दृष्टा हूँ। ऐसा सम्यग्दर्शन अनुभव कर लिया है। 'उदयं भुवन त्रयं' तीन लोकका ज्ञान हो गया। 'उदयं भुवन त्रयं' श्रुतज्ञानसे, भावश्रुतज्ञानसे तीन लोकमें क्या है, सबका ज्ञान हो गया। कहां-कहां कैसे द्रव्य, गुण, पर्याय परिणामते हैं, स्वतंत्र कैसे थीज है, नौ (तत्त्वका) भान होनेसे भुवन-तीन लोकका ज्ञान सम्प्रेष्टिको होता है। प्रत्यक्ष नहीं। लेकिन श्रुतज्ञानके बलसे स्वर्ग, नर्कमें क्या पर्याय है, समकित्ती कैसा है, मिथ्यादृष्टि कैसा है, सबका ज्ञान भावश्रुतज्ञानमें आ जाता है। समजमें आया? 'उदयं भुवन त्रयं' क्या तीन भुवन अंदरमें प्रगट होता है? भुवन त्रयका ज्ञान प्रगट होता है। पाठ तो ऐसा है, 'उदयं' समजमें आया?

'लोकालोक विलोकं' उसने लोक-अलोकको अच्छी तरह देज लिया है। और सम्प्रेष्टि, अपने स्वभावके भानमें ज्ञान ऐसा हुआ है, कि जिस ज्ञान द्वारा लोक और अलोकको इस तरह देजा है, जैसे निर्मल जलके कुंडमें मुज देजा जाता है। है न? 'आलबाले मुखं' पानीमें-जलमें जैसे मुज देजाता है, ऐसे अपने आत्मामें अपना भान होकर सम्यग्ज्ञान ऐसा हुआ (तो) लोकालोकका ज्ञान ज्वाल आ गया। समजमें आया? कोई भी उसकी प्रतीतिके बाहर रहा नहीं। समजमें आया? थोडा-थोडा अर्थ ठीक किया है। शीतलप्रसादने। थोडा-थोडा अर्थ ठीक किया है। कहीं-कहीं भूल की है। जहां व्यवहार आता है वहां शीतलप्रसादने भूल की है। बराबर अर्थ, पूरा अर्थ सख्या है नहीं। क्या कहते हैं? उसमें जो लिजा है वह सब पूरा अर्थ सख्या नहीं है। कोई-कोईमें गडबड है। यहां तो परीक्षा सत्यकी है। समजमें आया? कोई-कोई जगह व्यवहारसे निश्चय होता है, व्यवहार पहले आता है। ऐसा लिजा है। ऐसा है नहीं। तारणस्वामीसे विद्ध्य होता है। शास्त्रसे भी विद्ध्य हो जाता है। यहां तो सीधी निश्चयकी बात कहते हैं। सेठ लोगोको मालूम नहीं, पंडितोको प्रमादमें जाये। प्रमादमें समजे? पंडितके साथ प्रमाद मिलता है। भाई! ये मोक्षमार्गकी रीत है। उसकी गद्दी पर बैठना, उसका मार्ग चलना, बडी जिम्मेदारी है। सेठ! देजो!

'आलबाले मुखं यथा' समजे? 'आलबाले' यानी पानी न? भाई! कुंड.. कुंड. ठीक! 'आलबाले' निर्मल पानीका कुंड. कुंडमें जैसे देजे तो मुज दिजे। जैसे अपने दर्शनमें सम्यग्ज्ञान, सम्प्रेष्टिको ही सम्यग्ज्ञान होता है। दृष्टि जहां मिथ्यात्व है वहां ज्ञान प्यारह अंग नौ पूर्व पढे तो भी अज्ञान है, पाजंड है, मिथ्यात्व है। समजमें आया? टीका करके

भाईको भेजा है, ठीक है. ... आप अकेलार देओ. समजमें आया? क्या है, देजना तो पड़ेगा कि नहीं? सेठके बाद आपकी बारी है.

लोक और अलोकका ज्ञान. सम्यग्दृष्टिको ज्ञानमें शंका बिलकूल नहीं रहती. सब स्थितिका यथार्थ ज्ञान हो जाता है. ऐसा लोकालोकका ज्ञान सम्यग्ज्ञानमें-श्रुतज्ञानमें (हो जाता है). आलाहा..! ... तत्व कैसा है, पर्याय कैसी है, क्या वस्तु है, सब आ गया. नौ तत्वमें कोई इरकार होता नहीं. समजमें आया? विशेष बात है, अपने सार-सार कहते हैं. कौन-सी (गाथा) आयी? २२४. अब, २३६. बीचमें मद्यका त्याग, इलका त्याग आदिकी बात है, व्यवहारकी बात है. सम्यग्दर्शन हो तो जैसे ... त्याग, .. त्याग होता है रागमें. २३६. २३६ देओ.

दर्शनं तत्त्वार्थं श्रद्धानं, तीर्थं शुद्धं दृष्टितं।

ज्ञानमूर्ति संपूर्णं च, स्वात्म दर्शनं चिंतनं॥२३६॥

देओ! तत्त्वार्थं श्रद्धानं लिया, भाई! उमास्वामीका है. तत्त्वार्थं श्रद्धानं सम्यग्दर्शनं. वल शब्द लिया है. मूल बात वल है. तत्त्वार्थं श्रद्धानं सम्यग्दर्शनं. व्यवहार समकित नहीं, हां! ये निश्चय है. उसमें थोडा व्यवहार लिखा है. निश्चय अके ही है. ईसने अर्थमें दो डावा है. मूल है. सात तत्वका व्यवहार और निश्चयनयसे यथार्थ श्रद्धानं करना. वल मूल है. यहां भी कहा है कि, जवादि तत्वका सदा श्रद्धानं करना, उसमें कोई विपरीत नहीं.. वल व्यवहार समकित है. निश्चय सम्यग्दर्शन सदा अपनेसे भिन्न है. दो लिया है. यहां तो अके ही समकितकी बात है. समजमें आया? उसमें अर्थमें भी मूल है. वर्तमान चलता है ऐसा उसमें लिख दिया है. पंडितज! ये याद करना. तत्त्वार्थं श्रद्धानं जो है वल निश्चय समकित है. व्यवहार नहीं.

मुमुक्षु :- ...

उत्तर :- 'तीर्थं शुद्धं दृष्टितं'. उमास्वामीने जो तत्त्वार्थं श्रद्धानं कहा, वल यहां कहते हैं. उसका शब्द लेकर ही कहते हैं. तत्त्वार्थका श्रद्धानं सम्यग्दर्शन है. तत्त्वार्थमें आत्मज्ञान आ जाता है. समजमें आया? ओहोहो..! तत्त्वार्थका श्रद्धानं करना सम्यग्दर्शन है. तत्त्वार्थ क्या? सात. जैसे नौ पदार्थ, जैसे सात. जव, अजव, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष. प्रत्येक पर्याय कैसी-कैसी है और जव कैसा है, सब यथार्थ अकड़प लिया है. सात तत्वका नाम अके लिया है. समजे? तत्त्वार्थमें. जव, अजव आदि तत्व. जैसे लिया है न? भाई! सात तत्वका अके वचन लिया है. अके वचन है. यहां तो अकेवचन, भेद नहीं. सातकी भेदकी श्रद्धा वल व्यवहार श्रद्धा है. नौ तत्वकी भेद श्रद्धा वल व्यवहार है. ये बात यहां नहीं लेना है. उमास्वामीने भी नहीं लिया है. उसका शब्द यहां डावा है.

'दर्शनं तत्त्वार्थं श्रद्धानं'. तत्त्वार्थका श्रद्धानं करना सम्यग्दर्शन है. वल भवसागरसे तिरनेका

जलज (है). देभो! जो व्यवहार समकित है वह विकल्प है, वह तो पराश्रित व्यवहार है. व्यवहार भवसागर तिरनेका उपाय है नहीं. व्यवहार पराश्रय, निश्चय स्वआश्रय. ये दोनों तो महा सिद्धांत है. समझमें आया? कोई ऐसा कहे कि तत्त्वार्थ श्रद्धानं व्यवहार है. तो यहां कलते हैं कि 'तीर्थ शुद्ध दृष्टितं'. उससे तो तीर्थ है. भवसागर तिरनेका उपाय है. निर्विकल्प दृष्टि नहीं हो तो भवसागर तिरनेका उपाय हो सकता नहीं. व्यवहार समकित है वह तो विकल्प राग है. समझमें आया?

निश्चय और व्यवहार, दो प्रकारका समकित नहीं. समकित अेक है. समकितका कथन दो प्रकारका है. व्यवहार और निश्चय, कथन दो प्रकारका है, समकित दो प्रकारका नहीं है. समकित अेक प्रकारका है. आहा..! समझमें आया? कथन आये. अपना तत्त्वार्थका भान ज्ञायकमूर्ति, रागकी प्रतीत, भान हो गया (कि) स्वभावमें राग नहीं है, तो उसमें सातों तत्त्वोंका भान आत्माका भान होनेसे आ गया. उसमें नौ तत्त्व भेद्युक्त, देव-गुरु-शास्त्रकी श्रद्धा, भगवानकी वाणीकी श्रद्धा, भगवानकी श्रद्धा, ये सब विकल्प है, वह सब राग है, समकित नहीं. उसको निश्चय समकितके साथ ऐसा विकल्प देकर व्यवहार समकितका आरोप देनेमें आया है. व्यवहार समकित वह यथार्थ समकित नहीं. व्यवहार समकित संसार तिरनेका उपाय नहीं है, वह मोक्षका मार्ग नहीं है. आहा..! कितना याद करना? बहुत ईर्क हो गया अभी तो. र्तना ईर्क पड गया है कि वक्ताको तत्त्वकी जबर नहीं. श्रोताको तो कहांसे हो? जो कलते हैं, जय महाराज! डालचंदण! अेक पुस्तक लेकर आये, बनाओ. सेठ बना दे. लाओ, पांच हजार भर्यकर बना देते हैं. भले अंदर जहर भरा हो. सेठ! जिसमें जैनदर्शनकी क्या चीज है, उससे विरुद्ध लिखा हो. सेठ सालभ! ऐसा अेक पुस्तक है. हमने बनाया है. जाओ, छपवा लो. मावूम है उसमें विपरीतता कितनी है? विपरीतता मावूम है? क्या कलते हैं? क्या कला? देभा ही नहीं. चलो, छपवा दो. तुम्हारी मौजूदगीमें कलते हैं. आप दोनों बैठे हो. गुप्त बात तो है नहीं.

देभो! तारणस्वामी कैसे स्पष्ट बात कलते हैं! तत्त्वार्थ श्रद्धान दर्शन. यदि कोई उसे व्यवहार कहे, तो 'तीर्थ शुद्ध दृष्टितं'. शुद्ध दृष्टि और तिरनेवाला. दो बोल लिये. भाई! शुद्ध दृष्टितं, दृष्टिमय शुद्ध दृष्टि है, ऐसा कला है. आहाहा..! समझमें आया? डालचंदण! थोडा ओलंभा सुनना पडे, क्या करे? तारणस्वामी तो अकेली अध्यात्म दृष्टि और जिन-जिनकी ही पुकार है. उसकी बात अन्यके साथ अेक अक्षर मिलती नहीं. समझमें आया? संप्रदायवाले जो व्यवहारसे निश्चय, व्यवहारसे निश्चय (कलते हैं), उसके साथ मिलती नहीं. समझमें आया?

यहां कलते हैं, 'दर्शनं तत्त्वार्थ श्रद्धानं' यह भवसागरसे तिरनेका तीर्थ (है). सीधा शब्द है न? भाई! पंडितण! या 'तीर्थ शुद्ध दृष्टितं' अलग है निश्चय? ऐसा नहीं है.

उसके साथ संबंध है. मुझे दूसरा कलना है. कोई ऐसा कहे कि, 'दर्शनं तत्त्वार्थं श्रद्धानं' व्यवहार और 'तीर्थं शुद्ध दृष्टितं' निश्चय. ऐसा नहीं है. दो भाग ही नहीं है उसमें. समझमें आया? समझनेकी चीज है. मूल बात (है). 'दर्शनं तत्त्वार्थं श्रद्धानं' और कोई उसमें ऐसा निकाले कि 'दर्शनं तीर्थं शुद्ध' निश्चय. ऐसा है नहीं. 'दर्शनं तत्त्वार्थं श्रद्धानं'. जैसे भगवानने सात (तत्त्व) कहे, ऐसा अपने आत्मज्ञानमें सातों का भान अंतरमें प्रतीतमें आना, अनुभवमें आत्मा आना उसका नाम तत्त्वार्थं श्रद्धानं है. तत्त्वार्थं श्रद्धानंमें आत्मज्ञान आ जाता है, आत्मज्ञानमें तत्त्वार्थं श्रद्धानं आ जाता है. दोनों अके बात है. आलाला..!

'तीर्थ' और वह भवसागरसे तिरनेका तीर्थ है, जलज है. क्या व्यवहार समकित? विकल्प तो पराश्रित है, व्यवहार पराश्रित है. निश्चय स्वाश्रित. ये तो महासिद्धांत त्रिकावका है. तो व्यवहार समकित नौ तत्त्वका तत्त्वार्थं श्रद्धानं, वह संसार तिरनेका जलज है? बिलकूल नहीं. व्यवहार समकित बंधका कारण है, विकल्प है. वह बात यहां है ही नहीं. समझमें आया? देओ! ये श्रावकाचारकी बात चलती है. इसलिये पहले श्रावकाचार लिया, बादमें ज्ञान समुच्चयसार लिया था. गये साव लिया था न? ... इस बार श्रावकाचार आ गया. आये वह आये. द्विभागमें ये आया कि इसे लो. विभा तो सबमें है. सार-सार गाथा लेते हैं. छह पुस्तकमेंसे. समझमें आया? लाल अक्षरसे विभा है, देओ! हमारे पास लाल शीशपेन रहती है, हां! शीशपेन लाल रहती है.

यही शुद्ध दृष्टिमय है. भाई! जैसे लिया है, देओ! क्या कला? जो तत्त्वार्थं श्रद्धानं आत्मज्ञानपूर्वक नौ तत्त्वका, सातों तत्त्वोंका अंदर भान हुआ है, वह शुद्ध दृष्टिमय है, व्यवहार समकित अशुद्ध है, उपचार है, व्यवहार है, निमित्त है. वह नहीं. उसकी बात यहां नहीं है. ठीक, उतरता तो है. अकेबार सुनेगें और व्याख्यान चलता है उसमेंसे .. कि ऐसा कहते हैं, ऐसा है. समझमें आया?

ज्ञानमूर्ति. भाई! ये लिया. देओ! अके तत्त्वार्थं श्रद्धानं निश्चय सिद्ध करनेको कितने शब्द लिये हैं! कोई उसमेंसे व्यवहार निकाले तो वह सिद्ध नहीं होता है. ज्ञानमूर्ति. अकेला ज्ञान, स्वसंवेदनज्ञान. शास्त्रका ज्ञान नहीं, शास्त्रका ज्ञान विकल्पात्मक है. यहां तो तत्त्वार्थं स्वभावकी श्रद्धा हुई, अनुभव प्रतीतमें आत्मा आया, सर्वज्ञ जैसे आया तो ज्ञानमूर्ति (आया). पूरा ज्ञानस्वरूप मैं हूं, ऐसा वेदन हो गया. ज्ञानका स्वसंवेदन होना, उसमें ज्ञानमूर्ति आया. सम्यग्ज्ञान कला. निश्चय समकित, ज्ञान है. समकित भी निश्चय है, ज्ञान भी निश्चय है. समझमें आया? लोग कहते हैं न कि, व्यवहार समकित है यहां निश्चय ज्ञान कैसे है? ज्ञान भी व्यवहार और आचरण भी व्यवहार, ऐसा कहते हैं. अभी आया. हमारा बाहर आनेके बाद. नहीं तो सब जैसे ही पडे थे. हलमलवा, चलमचला. ईश्वरचंद्र! बहुत गडबडी चली है. पहले तत्त्वार्थं श्रद्धानं व्यवहार है. व्यवहार श्रद्धानंमें निश्चय ज्ञान कहांसे आया?

ईसलिये व्यवहार ज्ञान है. साथमें आत्म व्यवहार तीनों मोक्षका मार्ग (है), उससे निश्चय पायेगा. जैसा पत्रोंमें बहुत आता है. सब ठूठ बात. समझमें आया? ..यंदृष्ट! आता है कि नहीं वहां? वहां हमारे पास तो पत्र बहुत आते हैं.

वही शुद्ध दृष्टिमय है और वही ज्ञानमूर्ति है. अपने सर्व गुणोंसे पूर्ण है. देओ! अनंत गुणसे दृष्टिमें पूर्ण है. पूर्ण.. पूर्ण.. पूर्ण. अकेला शुद्ध आत्मा. और अपने ही आत्माका दर्शन. देओ! 'स्वात्म दर्शन चिंतनं', देओ! 'स्वात्म दर्शन चिंतनं'. दो प्रकार नहीं, एक ही बात सबमें है. चारों पदमें अकेले निश्चय समकितकी बात की है. समझमें आया? बहुत गाथा (अलौकिक है). लोग भी पढ़ते हैं उसमें गडबड करते होंगे. मावूम नहीं है कि तत्त्वार्थ श्रद्धान क्या है. कल एक भाई कहते थे, आपके हैं न? सांगली.. सांगली कहां है आपका गांव? सांगली. समझे नहीं तो क्या करे? हम पहले जैसा नहीं सुनते थे, दूसरा सुनते थे. है कहां तो सख्या सुनावे? सब गडबड ही गडबड चलती है. बराबर है? पंडितदृष्ट! ये तो ज्ञाननेकी बात है. आलाहा..!

भगवान! तेरी चीज सत्य क्या है और शास्त्रमें सत्य क्या कहा है, उसकी समझ बिना विपरीत अर्थ और उलटा अर्थ निकाले बिना रहे ही नहीं. समझमें आया? वह तो अपने आ गया था न? अर्थ अनर्थ. नहीं? एक श्लोकमें आ गया. एक श्लोकमें आया था. अर्थका अनर्थ. जैसा शास्त्र अर्थ कहते हैं और भाव जैसा है, जैसा समझे बिना अर्थका अनर्थ करे. कहा था, यशोविजयका कहा था, 'जतिअंधनो दोष नहीं..' आंभसे अंधा है तो बेचारा कुछ देभता नहीं. 'जतिअंधनो दोष नहीं, .. जाने नहीं अर्थ, पाण मिथ्यादृष्टि तेथी आकरो, करे अर्थना अनर्थ.' जलयंदृष्ट! कडक बात है, हां! अकेले व्यवहारको माननेवालेको तो धाव लगता है. विरोध हो गया. अभी भी विरोध करते हैं. तत्त्वको समझते नहीं है, क्या है.

ईतने बोल लिये हैं ईसमें, देओ! 'दर्शनं तत्त्वार्थ श्रद्धानं' वही तत्त्वार्थ श्रद्धान. निश्चय सम्यग्दर्शन यौथे गुणस्थानमें. वही 'तीर्थ शुद्ध दृष्टितं' वही शुद्ध सम्यग्दर्शन, वही भवसागर तरनेका उपाय, वही 'ज्ञानमूर्ति संपूर्ण च' संपूर्ण ज्ञानका देभनेवाला, माननेवाला. और 'स्वात्म दर्शन चिंतनं'. अपने आत्माका दर्शन और चिंतन नाम अनुभव. देओ! एक गाथामें उमास्वामीने कहा था तत्त्वार्थ श्रद्धान, वर्तमानमें लोग उसको व्यवहार समकित कहते हैं. ईसलिये पूरे अर्थमें बहुत भूल हो गयी. समझमें आया? जैसा है नहीं. क्या मोक्षमार्ग है तत्त्वार्थ सूत्र या अंधमार्ग है? व्यवहार समकित तो आस्रव है, विकल्प है. वह तत्त्वार्थ सूत्र व्यवहार मोक्षमार्ग है? ... अर्थमें पहलेसे कह दिया है, तत्त्वार्थ श्रद्धान व्यवहार समकित और आत्माका ज्ञान निश्चय समकित. लेकिन दोनों एक है, सुन तो सही. तत्त्वार्थ तो भेदवाला तत्त्वार्थ श्रद्धान हो तो व्यवहार है. लेकिन जहां अभेद तत्त्वार्थ श्रद्धान

अेक स्वइपका लान करके आत्माका ज्ञान साथमें हुआ वल नलशुच सभ्यदर्शन है. सभजमें आया?

अपने सर्व गुणोंसे पूर्ण अैसा आत्मा. अपने ही आत्माका दर्शन. अैसा पूर्ण प्रलु उसका अनुभव, तीनों ले वलया. कौन तीन? पहले तो अैसे वलया कल तत्वार्थ (श्रद्धानं) सभ्यदर्शनं, वल भवसागर तलरनेका उपाय वलया. बादमें तीन वलया. वही शुद्ध दृष्टलभय है-अेक. वही ज्ञानमूर्तल है-दो. वल सर्व गुणोंसे पूर्णका अनुभव करता है-आचरण. ये तीनों वलये. दर्शन, ज्ञान और चारलत्र. सभजमें आया? 'ज्ञानमूर्तल संपूर्ण च, स्वात्म दर्शन चलतनं'. ये अनुभव वलया, आचरण वलया. दर्शनका आचरण, ज्ञानका आचरण, स्वइपका आचरण-स्थलरता, उसका नाम भोक्तका मार्ग और भवसागर तलरनेका वल तीर्थ है. बाकी सब बाह्यका व्यवहार तीर्थ है. शुभभाव होता है तो यात्रा आदलका भाव हो. होता है, लेकलन वल भवसागरसे तलरनेका कारण है (अैसा नहीं है). सभजमें आया?

भुभुकु :- साधन तो है न?

उत्तर :- साधन-ज्ञधन है नहीं. वल तो धर्मी जलवको पूर्ण वीतराग न हो, तल अैसा भगवानका प्रतलमाका, वाणीका, यात्राका शुभभाव होता है. होता है, नहीं हो अैसा नहीं है. लेकलन वल भाव पापसे बचनेको पुण्यभाव जलतनी कलमत है. सेठ! उसकी कलमत कोरु संवर, नलर्जरामें ङलव दे (तो) बडी वलपरीत दृष्टल है. सभजमें आया? लो, २३६ हो गरु.

(श्रोता :- प्रमाण वचन गुरुदेव!)

